राज्य अध्याय 41

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बंधित इस पाठ को प्रभु के हांथों में सौंपे।

2	**साझा करें** (20 मिनट) ***[शांत समय]*** **यिर्मयाह 25,29,30 और 31**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें (या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि अपने दिये गये अनुच्छेद (यिर्मयाह 25,29,30 और 31) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करें** (5 मिनट) ***[रोमियों में प्रमुख वचन]*** **(5) 2 इतिहास 7:14**

दो-दो करके *पुनरावलोकन करें।*

(5) परमेश्वर की चंगाई। 2 इतिहास 7:14. "तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं, दीन होकर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी होकर अपनी बूरी चालसे फिरें, तो मैं स्वर्ग में से सुनकर उनका पाप क्षमा करूँगा।"

4	**शिक्षा देना** (85 मिनट) ***[यीशु के दृष्टान्त]*** **दाख की बारी में मज़दूर**

मत्ती अध्याय 20:1-16 में "दाख की बारी में मज़दूरों का दृष्टान्त",

परमेश्वर के राज्य में पुरस्कार के बारे में दृष्टान्त है।

"एक दृष्टान्त" स्वर्गीय अर्थ को समझाने के लिए एक ज़मीनी या भौतिक कहानी होती है। यह कहानी जीवन से जुड़ी हुई सच्ची घटना या काल्पनिक कहानी होती है, जिससे एक आत्मिक सच्चाई को सिखाया जाता है। यीशु ने सार्वजनिक स्थलों और रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी से जुड़ी चीज़ों व घटनाओं का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य के भेदों को प्रगट करने और लोगों को उनकी असलीयत दिखाने और उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता बताने के लिए किया। हम इस दृष्टान्त का अध्ययन करने वाले छः निर्देशों के आधार पर करेगें (नियमावली 1, परिशिष्ट 1 को देखें)।

पढ़ें मत्ती 20:1-16.

---

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

परिचय। इस दृष्टांत को आलंकारिक भाषा में व्यक्त किया गया है और इस दृष्टांत का आत्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिए सबसे पहले हम वचनों का और कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।
चर्चा करें। इस कहानी में पाए जाने वाले जीवन के लिए सत्य अवयव कौन से हैं?
ध्यान दें।

गृहस्वामी। सचमुच में वह घर का स्वामी है। सम्भवतः वह एक ऐसी सम्पदा का मालिक है, जो कि कई मकानों और एक बड़ी दाख की बारी से मिल कर बनी है।

किराए के मज़दूर। कटाई के समय में, सामान्य रूप से मज़दूरों को प्रतिदिन के आधार पर मज़दूरी पर रखा जाता था। वे बाजारों में इकट्ठा होते थे, जहाँ काम कराने वाले उनको मज़दूरी पर लेने के लिए आया करते थे। एक पूरे कार्य दिवस में सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक काम के 12 घंटे निहित हुआ करते थे। प्रत्येक दिन के अंत में, उनको उनकी मजदूरी दी जाती थी (लैव्यव्यवस्था 19:13)।

समझौता। सबसे पहले आने वाले मज़दूरों ने गृहस्वामी के साथ एक दीनार में काम करने के लिए सहमति ठहराई। उस समय पर एक दीनार एक पूरे दिन के काम की मजदूरी है। बाद में आने वाले मज़दूरों ने इस प्रकार का कोई समझौता नहीं किया, क्योंकि उन्होंने केवल दिन के कुछ भाग में काम किया था। हालाँकि, गृहस्वामी ने उनसे वायदा किया था कि जो ठीक होगा वह उनको देगा।

काम की मज़दूरी। 12 घंटे के कार्य दिवस के अंत में, मज़दूरों ने सामान्य रूप से एक दीनार प्राप्त किया। इस कहानी में सबसे पहले आने वाले मज़दूरों ने वह प्राप्त किया जिसके लिए काम करने की उन्होंने सहमति ठहराई थी। हालाँकि, इस गृहस्वामी ने मज़दूरों की अपेक्षा से बहुत बढ़ कर किया था। उसने सबसे अंत में आने वाले मज़दूरों को सबसे पहले भुगतान करना आरम्भ किया। और उसने अंतिम मज़दूरों को भी सबसे पहले वाले मज़दूरों के समान ही धन का भुगतान किया!

---

2. तात्कालिक संदर्भ की जाँच करें और दृष्टांत के अवयवों को निर्धारित करें।

परिचय। इस दृष्टांत की 'कहानी' का संदर्भ दृष्टांत की "परिस्थिति" और "व्याख्या या लागूकरण" में निहित हो सकता है। इस दृष्टांत की परिस्थिति दृष्टांत को व्यक्त करने के लिए अवसर का बखान कर सकती है या दृष्टान्त को बताते समय परिस्थितियों को परिभाषित कर सकती है। सामान्य रूप से दृष्टांत की कहानी से *पहले* ही परिस्थिति मिल जाती है तथा व्याख्या या लागूकरण को सामान्य रूप से दृष्टांत की कहानी के *बाद* में पाया जाता है।
खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत की परिस्थिति, कहानी, और व्याख्या या लागूकरण क्या है?
ध्यान दें।

(1) मत्ती 19:16-30 में दृष्टांत की परिस्थिति को विस्तारित और निहित किया गया है।

दो बातें हमें दिखाती है कि इस दृष्टांत की परिस्थिति क्या है। पहला शब्द: "के लिए" दिखाता है कि यह पूर्ववर्ती बातों से जुड़ा हुआ है । और पूर्ववर्ती अनुच्छेद के उपसंहार के समान ही पूर्ववर्ती अनुच्छेद का उपसंहार भी है, "परन्तु जो पहले हैं, पिछले होंगे और जो पिछले हैं, पहले होंगे।"

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश न करने का जोखिम। मत्ती 19:16-26 एक जवान पुरुष का उल्लेख करता है, जो बहुत धनी

था, परन्तु उसे यह भी लगता था कि उसे अभी तक अनन्त जीवन (उद्धार) प्राप्त नहीं हुआ था। वह उद्धार पाने की खोज में था, परन्तु वह गलत तरीकों से प्रयास किया करता था। वह सोचता था कि उसे व्यवस्था की बातों का पालन करने के द्वारा उद्धार प्राप्त हो जाएगा (मत्ती 19:16,20)। यीशु ने दस आज्ञाओं की दूसरी सूची में की आज्ञाओं को उद्धरित किया था। उसे पहली सूची की आज्ञाओं को उद्धरित करने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि दूसरी सूची की आज्ञाओं का पालन करने में विफल होने का अर्थ पहली सूची की आज्ञाओं का पालन करने में विफल होना है (1यूहन्ना 4:20)।

उस धनी जवान पुरुष की प्रतिक्रिया यह प्रदर्शित करती है कि मसीह द्वारा आज्ञाओं की गहन आत्मिक व्याख्या के प्रति उसका रवैय्या बहुत दिखावटी था (मत्ती 5:21-48)। यीशु ने उत्तर दिया, "यदि तू सिद्ध होना चाहता है तो जा, अपना माल बेचकर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले।" (मत्ती 19:21)।

यीशु ने उस धनी जवान पुरुष से भले काम करने के द्वारा उद्धार पाने के लिए नहीं कहा था! वह उस धनी जवान पुरुष को *अपनी बातों के आज्ञापालन में दिखने वाले पूर्ण भरोसे की जाँच में* डाल रहा था। बिना यीशु मसीह पर पूर्ण भरोसा किए, जो आत्म-समर्पण और आज्ञापालन में दिखाई पड़ता है, इस धनी जवान पुरुष से यह उम्मीद नहीं की जा सकती थी कि वह अपना सारा माल बेच डाले। यीशु जानते थे कि उसका हृदय उसकी सम्पत्ति से बँधा हुआ था। यदि यह धनी जवान पुरुष एक *सिद्ध विश्वासी,* या बेहतर व *परिपक्व विश्वासी* बनना चाहता था, तो उसे अपना सम्पूर्ण भरोसा यीशु मसीह पर रखना और यीशु द्वारा कही बातों को पूरा करना था। तब उसे जाकर अपनी सारी सम्पत्ति को बेच देना था , जो यीशु मसीह पर भरोसा करने और यीशु का शिष्य बनने के मार्ग में बाधा के रुप में खड़ी थी और तब वह एक शिष्य के समान यीशु का अनुसरण करना आरम्भ कर सकता था। यीशु का अनुसरण करने के द्वारा, वह अपने आप का इनकार करने, प्रतिदिन अपना क्रूस उठाने और यीशु की गवाही देने के बारे में सीख सकता था। यीशु मसीह में बिना विश्वास और भरोसे के, जो आत्म-समर्पण और आज्ञापालन में दिखाई पड़ता है, कोई भी उद्धार नहीं पा सकता है!

यीशु मसीही बनने की इच्छा रखने वाले हर जन को अपना सब कुछ बेच देने वाली परीक्षा में डालता है जो कि एक बनना चाहता है! और साथ ही यीशु अपनी हर एक संतान को किसी भी विशेष परीक्षा में नहीं डालता है। पुराने नियम में अय्यूब, अब्राहम, याकूब और यूसुफ, और नये नियम में जक्कई और अरमतिया का यूसुफ, ये वह लोग थे जिनके पास बहुत सम्पत्ति थी और उनको जाकर अपनी सम्पत्ति बेच देने के लिए नहीं कहा गया था! इसके अलावा, अब्राहम और बाकी के यह सब धनी लोग बचाए गए (धर्मी ठहराए गए) थे, किसी भले काम को करने के द्वारा नहीं, परन्तु केवल विश्वास के द्वारा (उत्पत्ति 15:6; रोमियों 3:28)! और जिस प्रकार का जीवन उन लोगों ने जीया उससे उन्होंने यह प्रदर्शित किया कि उनका विश्वास सच्चा जीवित था (इब्रानियों 11:1-40; याकूब 2:21-23)।

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने में कठिनाई। उस धनी जवान पुरुष ने अपने धन और सम्पत्ति को रखने का और यीशु मसीह से फिर जाने का चुनाव किया। उसने अपने भरोसे को यीशु पर नहीं रखा और उसने यीशु का अनुसरण करना आरम्भ नहीं किया। तब यीशु ने कहा, "परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।" यीशु ने जो कहा और बताया था उसका वास्तव में अर्थ यह था कि किसी धनवान व्यक्ति के लिए काम करना, उसमें कीड़ा लगना या परमेश्वर के राज्य में जाने के लिए उसके नये मार्ग को प्राप्त करना *बिलकुल असम्भव* है! धन, संपत्ति, पैसा और ऐसी चीजें जो इन के साथ जुड़ी होती हैं अर्थात सफलता, शक्ति और प्रसिद्धि, प्राकृतिक मनुष्यों के हृदय, मन और जीवन पर इतनी शक्तिशाली पकड़ बना लेती हैं कि वे खुद को इससे बाहर नहीं निकाल पाते हैं! यह बातें धनी, शक्तिशाली और

प्रसिद्ध लोगों को मोहित करती हैं, और उनको परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने से रोके रखती हैं (मत्ती 6:24; 1तीमुथियुस 6:9-10)। यीशु ने अपने शिष्यों के मन को प्रभावित करने के लिए पूर्ण शब्दों में बात कीं कि आरम्भ से लेकर अंत तक उद्धार कोई मानवीय उपलब्धि नहीं है, लेकिन परमेश्वर की ओर से एक सर्वश्रेष्ठ और अनुग्रहकारी उपहार है (यूहन्ना 6:44-45; इफिसियों 2:8-9)।

मसीह के शिष्य इस गहन प्रकाशन से स्तब्ध थे और उन्होंने पूछा, "फिर किसका उद्धार हो सकता है?" शिष्यों ने यह तर्क सम्भवतः इसलिए दिया था क्योंकि गरीब लोग भी धनी बनना चाहते हैं, तो क्या वे भी परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकेंगे । यीशु ने उत्तर दिया, "मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है" (मत्ती 19:26)। हर एक मनुष्य, चाहे धनी हो या गरीब, वह उद्धार के लिए पूर्ण रूप से परमेश्वर पर निर्भर करता है। अपने आप से, कोई भी व्यक्ति स्वयं के उद्धार के लिए कुछ भी नहीं कर सकता है! किसी भी व्यक्ति को उद्धार केवल इसलिए प्राप्त हुआ है क्योंकि उसने पवित्र आत्मा के कार्य के द्वारा, *ऊपर से* नया जन्म पाया है। "अचम्भा न कर कि मैंने तुझ से कहा, 'तुझे नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है" (यूहन्ना 3:3-8)। यहाँ तक कि परमेश्वर ऐसा विश्वास भी *प्रदान* करते हैं जिसका उस जन को अभ्यास करना है। "जितने अनन्त जीवन के लिये ठहराए गए थे, उन्होंने विश्वास किया।" (प्रेरितों. 13:48; तुलना करें फिलिप्पियों 1:29 से)। इस प्रकार से, संक्षेप में, यीशु मसीह सिखाते हैं कि लोगों का उद्धार उनके अपने ही किसी प्रयत्न के द्वारा नहीं होता है, परन्तु उनका उद्धार केवल परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह के द्वारा होता है (2तीमुथियुस 1:9-10)।

परमेश्वर के राज्य में त्यागपूर्ण सेवा के लिए पुरस्कार। पतरस ने कहा कि वह और अन्य शिष्य अपना सब कुछ त्याग कर मसीह के पीछे हो लिए थे। और उसने पूछा कि उनको क्या मिलेगा। एक तरफ तो पतरस और अन्य शिष्यों ने बिलकुल वही किया जो यीशु ने उस धनी जवान पुरुष से करने के लिए कहा था। वे अपना सब कुछ त्याग कर यीशु के पीछे हो लिए थे (लूका 5:11)। दूसरी तरफ, यीशु ने कहा कि ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे कोई मनुष्य उद्धार पाने के लिए कर सकता है (मरकुस 10:26-27)। यह केवल परमेश्वर ही है जो अनन्त जीवन (उद्धार) प्रदान करता है!

यीशु ने अपने चेलों को सुनिश्चित करने वाला उत्तर दिया। "ऐसा कोई नहीं, जिसने मेरे सुसमाचार के लिए घर या भाइयों बहिनों या माता या पिता या बाल-बच्चों या खेतों को छोड़ दिया हो, और अब इस समय सौ गुणा न पाए, घरों और भाइयों और बहिनों और माताओं और बाल-बच्चों और खेतों को, पर सताव के साथ और परलोक में अनन्त जीवन।" (मरकुस 10:29-30)। जिस किसी ने भी यीशु मसीह के लिए बलिदान चढ़ाया है, तो जितना उन्होंने त्यागा है उसकी तुलना में इस वर्तमान समय में वह उससे कहीं अधिक प्राप्त करेगा। सताव और कष्टों के बावज़ूद जिनका उनको इस पृथ्वी पर मसीह के लिए सामना करना पड़ता है, वे अधर्मी लोगों की तुलना में लोगों के साथ भौतिक सम्पत्ति और सम्बन्धों का बहुत अधिक आनन्द लेंगे। और मसीह के दूसरे आगमन के पश्चात वे नये स्वर्ग और नई पृथ्वी के रूप में परमेश्वर के राज्य को उसके अंतिम रूप में प्राप्त करेंगे।

प्रथम और अंतिम होने के बारे में चेतावनी। परमेश्वर लोगों पर या उनकी सफलताओं को उस प्रकार से नहीं देखते हैं जैसे कि सांसारिक लोग देखते हैं। 1शमूएल 16:7 कहता है, "क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है, मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है" (1कुरिन्थियों 4:5)। "जो लोग पहले हैं" यह वे लोग हैं, जो अपनी सम्पत्ति, शिक्षण योग्यता, और पद, या सफलता, उपलब्धियों और प्रतिष्ठा के कारण, सामान्य लोगों के, और कभी कभी मसीही जनों के भी मध्य में बहुत सम्माननीय होते हैं। परन्तु क्योंकि परमेश्वर मनों को देखता है, इसलिए इनमें से बहुत से लोगों

को परमेश्वर के राज्य में अन्यों के पीछे स्थापित किया जाएगा, और कुछ को परमेश्वर के राज्य से बाहर कर दिया जाएगा (मत्ती 7:21-23)।

"जो लोग पहले हैं" यह वे लोग भी हो सकते हैं जिन्होंने मसीह पर विश्वास किया था और अपनी अल्प आयु में ही कलीसिया में गए थे। परन्तु बजाए इस बात को एक महान सौभाग्य के रूप में देखने के, वे इसे एक योग्यता के रूप में समझते हैं, कुछ ऐसा जिसके लिए परमेश्वर उनको पुरस्कृत करेगा।

"जो लोग पिछले हैं" वे लोग हो सकते हैं जिनके जीवन बाद में परिवर्तित हो गए , जिस प्रकार से जक्कई, जो कठोर व्यापारी और चुंगी लेने वाला था (लूका 19:1-10) या भयंकर अपराधी और हत्यारा जिसे यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था (लूका 23:39-43)। जिनको कलीसिया में अत्यन्त महत्वपूर्ण समझा जाता है उनमें से बहुत से पिछले होंगे, और ऐसे बहुत से जो पृथ्वी पर एकदम अज्ञात थे वे पहले होंगे। ऐसे लोग उस कंगाल विधवा के जैसे हो सकते हैं, जिसने अपनी सारी जीविका को दान में दे दिया (मरकुस 12:41-44), या बैतनिय्याह की रहने वाली मरियम, जिसके द्वारा यीशु के प्रति किए गए दयालु कार्य की शिष्यों के द्वारा आलोचना की गई थी (मत्ती 26:8), या संसार में रहने वाले बहुत से बच्चे, जिन्होंने अपने भरोसे को यीशु मसीह पर रखा, जबकि शिष्यों ने अपने पद के महत्व के बारे में झगड़ा किया था (मत्ती 18:1-4; 20:20-28)। इसी कारण से यीशु ने अपने शिष्यों और सभी मसीही जनों को यह चेतावनी दी है कि वे ऐसी आत्मा से सावधान रहें जो "पहले होने" की इच्छा करती है।

दाख के मज़दूरों का दृष्टांत इस सिद्धांत की व्याख्या करता है कि जो पहले हैं वह पिछले होंगे और जो पिछले हैं वह पहले होंगे। जब यीशु ने कहा, "स्वर्ग का राज्य किसी गृहस्वामी के समान है, आदि।", तब वह हमें यह बताना चाहते हैं कि अंतिम न्याय के दिन में अर्थात परमेश्वर का राज्य आने पर, उसके अंतिम चरण में क्या होगा।

(2) मत्ती 20:1-15 में इस दृष्टांत की कहानी को निहित किया गया है।

(3) मत्ती 20:16 में इस दृष्टांत की व्याख्या या अनुप्रयोग को निहित किया गया है।

यीशु इस दृष्टांत का समापन उस प्रकार से करते हैं जैसे उसने मत्ती 19:16-30 में समापन किया था, "परन्तु बहुत से जो पहले हैं, पिछले होंगे, और जो पिछले हैं, पहले होंगे।" यीशु अपने शिष्यों और सभी मसीही जनों को चेतावनी देता है कि वे उन पहलों के बीच में न हों जो कि पिछले होंगे!

उन लोगों के बारे में तीन बातें कहीं जा सकती हैं जो अपने आप को पहले वालों के रूप में समझते हैं:

पहले वालों में गिने जाने वाले लोग सोचते हैं कि उनको उनके द्वारा पूरे किए गए काम के लिए पुरस्कृत किया जाना चाहिए! पतरस यह जानने के लिए उत्सुक था कि उसे और अन्य शिष्यों को क्या हासिल होगा, क्योंकि उन्होंने सब कुछ त्याग कर यीशु का अनुसरण किया था। यीशु ने वायदा किया था कि वे लोग अपने भरोसे और आज्ञाकारिता के लिए बहुतायत से पुरस्कृत किए जाएँगे। परन्तु उसने उनको चेतावनी दी कि आत्मिक मामलों के सम्बन्ध में मजदूरी के लिए काम करने की आत्मा का शिकार होने से बचें! वे परमेश्वर की ओर से अनुग्रहकारी वरदान के रूप में अपने उद्धार को प्राप्त करते हैं, किसी ऐसी वस्तु के रूप में नहीं जो उन्होंने कमाई हो! इसलिए, परमेश्वर की ओर से मिलने वाले पुरस्कार, पृथ्वी पर लोगों की तरफ से मिलने वाले पुरस्कारों के समान नहीं होते हैं। केवल उद्धार ही नहीं, परन्तु परमेश्वर के राज्य में सेवा के लिए परमेश्वर की ओर से मिलने वाले पुरस्कार भी (1कुरिन्थियों 3:11-15) उसके लोगों के लिए परमेश्वर के योग्य अनुग्रह और प्रेम का प्रदर्शन हैं।

परमेश्वर की ओर से मिलने वाले पुरस्कार कभी भी पूरे किए गए काम का मुआवजा नहीं होते हैं!

जिनको पहले वालों में गिना जाता है वे लोग सोचते हैं कि उनको उनके द्वारा पूरे किए गए काम के अनुपात में पुरस्कृत किया जाना चाहिए। वे यह पहचानने में विफल हो गए हैं कि परमेश्वर पूर्ण रूप से सर्वश्रेष्ठ हैं और अपनी कृपा को बाँटने का अधिकार केवल उसी के पास है और वह अपने पुरस्कारों को तभी देते हैं जब वह प्रसन्न होते हैं ! यदि परमेश्वर उस व्यक्ति के समान जो अपने सम्पूर्ण जीवन में मसीही जन रहो हो, अपनी कृपा को किसी ऐसे व्यक्ति को देना चाहते हैं, जो केवल अपने जीवन के अंत के दिन में मसीही जन रहा हो, तो परमेश्वर के पास ऐसा करने का अधिकार है। कोई भी मनुष्य परमेश्वर की आलोचना नहीं कर सकता है, क्योंकि हर एक जन ने परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा उद्धार पाया हुआ है, और न कि उसके व्यवस्था के कामों से, उसके भले कामों या उसकी उपलब्धियों से, और न ही उसके समर्पण, उत्साह या बलिदान के कारण ! इसलिए, यह दृष्टांत शिक्षा प्रदान करता है कि कोई भी परमेश्वर से कुछ भी हासिल करने का हकदार नहीं है, उद्धार भी नहीं, जो एकमात्र पुरस्कार है। यह परमेश्वर की स्वतंत्रता और सम्प्रभुता पर बल डालता है कि वह विशुद्ध रूप से उसकी कृपा से अपने पुरस्कार प्रदान करता है ।

जिनको पहले वालों में गिना जाता है वे लोग सोचते हैं कि जिन लोगों ने काम नहीं किया है उन्हें पुरस्कृत नहीं किया जाना चाहिए। वे अक्सर ऐसे छोटे और अज्ञात लोगों से ईर्ष्या रखते हैं, जिनको परमेश्वर उनसे बढ़ कर बड़ी प्रतिष्ठा प्रदान करता है जिन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन में परमेश्वर के लिए कठोर परिश्रम किया है! इसलिए, यह दृष्टांत मसीही जनों को शिक्षा देता है कि वे अपने श्रम या परमेश्वर के राज्य में पाई गई उपलब्धियों के लिए स्वयं पर घमंड करने से बचें!

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरणों की पहचान करें।

परिचय। यीशु ने दृष्टांत की कहानी के प्रत्येक विवरण में से कुछ आत्मिक महत्व पाने का इरादा नहीं किया था। यह प्रासंगिक विवरण दृष्टांत की कहानी में पाए जाने वाले ऐसे विवरण हैं जो केंद्रीय बिंदु या मुख्य विषय या दृष्टांत के पाठ को मज़बूत करते हैं। इसलिए हमें दृष्टांत की कहानी के हर विवरण के लिए स्वतंत्र आत्मिक महत्व को जिम्मेदार नहीं ठहराना चाहिए।
खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी में कौन से विवरण वास्तव में आवश्यक और प्रासंगिक हैं।
ध्यान दें।

(1) दृष्टांत को एक रूपक के रूप में समझाना (रूपक)।

इस दृष्टांत के साथ अक्सर रूपक की व्याख्या द्वारा दुर्व्यवहार किया गया है। हालाँकि कुछ अनुवादकों ने अन्य बहुत ही मूल्यवान शिक्षाओं को लिखा है और वे इस दृष्टांत के लिए एक रूपक अर्थ के साथ आए हैं, जिसे इसके संदर्भ से कम नहीं किया जा सकता है और फलस्वरूप जिसे अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए।

इरेनाइयुस (130-200 ई.प.) ने इस दृष्टांत की व्याख्या निम्नलिखित रूप से की है। "गृहस्वामी" परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है। "अलग-अलग पहर में रखे गए मज़दूर" सृष्टि के समय के लोगों, सृष्टि हो जाने के बाद के लोगों और अंत समय के लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

ओरिजेन (185-254 ई.प.) ने इस दृष्टांत की व्याख्या निम्नलिखित रूप से की है। "गृहस्वामी" परमेश्वर का प्रतिनिधित्व

करता है। "पहली पारी के मज़दूर " सृष्टि के समय से लेकर नूह तक लोगों की पीढ़ियों का प्रतीक हैं। "दूसरी पारी के मज़दूर" नूह के समय से लेकर अब्राहम तक लोगों की पीढ़ियों का प्रतीक हैं। "तीसरी पारी के मज़दूर" अब्राहम के समय से लेकर मूसा तक लोगों की पीढ़ियों का प्रतीक हैं। "चौथी पारी के मज़दूर" मूसा के समय से लेकर यहोशू तक लोगों की पीढ़ियों का प्रतीक हैं। "पाँचवीं पारी के मज़दूर" यहोशू के समय से लेकर यीशु तक लोगों की पीढ़ियों का प्रतीक हैं। "दीनार" उद्धार का प्रतिनिधित्व करती है।

ग्रेगरी द ग्रेट (540-604 ई.प.) ने इस दृष्टांत की व्याख्या निम्नलिखित रूप से की है। "दाख की बारी" सृष्टि के समय से लेकर मसीह के दूसरे आगमन तक की कलीसिया का प्रतीक है। "गृहस्वामी" परमेश्वर का प्रतीक है। "मज़दूर" वे शिक्षक हैं जो विभिन्न समयों में कलीसिया में आने वाले मसीही जनों को निर्देश प्रदान करते हैं, आदम से लेकर नूह तक, नूह से लेकर अब्राहम तक, अब्राहम से लेकर मूसा तक, मूसा से लेकर यीशु तक। "पहले, तीसरे, छठे, सातवें और नौवें घंटे के मज़दूर" उन इब्रानी लोगों को दर्शाते हैं , जिन्होंने परमेश्वर की महिमा की और उसे आदर प्रदान किया और संसार के आरम्भ से ही दाख की बारी की खेती करने के लिए दृढ़ रहे। "ग्यारहवाँ घंटा" मसीह के पहले आगमन से लेकर उसके दूसरे आगमन की समयावधि का प्रतीक है। "ग्यारहवें घंटे के मज़दूर" प्रेरितों को दर्शाते हैं, या किसी अन्य व्याख्या में, अन्यजातियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। या विभिन्न घंटे एक व्यक्ति के जीवन के विभिन्न चरणों को दर्शाते हैं: बचपन, किशोरावस्था, युवा, वयस्क, अधेड़ आयु और वृद्धावस्था।

लेंस्की ने इस दृष्टांत की व्याख्या निम्नलिखित रूप से की है। "भंडारी" मसीह को दर्शाता है। "दीनार" अस्थायी या सांसारिक आशीषों का प्रतीक है। "ग्यारहवें घंटे में किराए पर लिए गए मज़दूर" अक्षम्य आलस्य में समय बिताने वाले लोगों को दर्शाते हैं।

अन्य व्याख्याएँ जिनको अवश्य ही अस्वीकार किया जाना चाहिए:

यहूदी और अन्यजाति: "जिन्हें पहले बुलाया गया" वे यहूदियों का प्रतिनिधित्व करते हैं और "जिन्हें बाद में बुलाया गया" वे अन्यजातियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसके संदर्भ में ऐसा कुछ भी नहीं है जो यह सुझाव देता है।

मालिक-कर्मचारी के संबंध: "मालिकों को अपने मज़दूरों को एक जैसा ही वेतन देना चाहिए, चाहे कोई कितना भी काम करें!" इस संदर्भ में कुछ भी ऐसा नहीं है जो ऐसा सिखाये। यीशु का यह सिखाने का इरादा नहीं है कि इस सिद्धांत को मजदूरी और व्यापार में सामान्य रूप से लागू किया जाना चाहिए। इससे आलस्य, अराजकता और भ्रष्टाचार पैदा होगा और यह बाइबल भी नहीं है। "यदि कोई काम करना न चाहे तो खाने भी न पाए।" (2थिस्सलुनीकियों 3:10)।

इसके विपरीत, यीशु ने यह सिखाने का इरादा किया कि सिद्धांत "जितने पिछले हैं, वे पहले हो जायेंगे और जो पहले हैं, वे पिछले होंगे। लोगों के साथ परमेश्वर के व्यवहार को दर्शाते हैं ! यीशु उस रवैये की निंदा करते हैं जो "इतने काम के लिए इतना वेतन" के आधार पर परमेश्वर से सौदा करने का प्रयास करता है![11]

जॉन एन डर्बी (1800-1882) का विधान। "यीशु ने दुनिया के इतिहास को सात विधानों में विभाजित किया है" (1) बाढ़ से पहले स्वर्ग की स्थिति, (2) नूह, (3) अब्राहम, (4) राजा, पुरोहितो और व्यवस्था के अधीन इस्राएल (5) अन्यजातियों,

[11] कुछ मसीहियों, यहूदियों और मुसलमानों में उद्धार व्यवस्था (तोरह व शरिया) के कामों के द्वारा है। हिन्दुओं और बोद्धों में कर्म व पुनर्जन्म है।

(6) पवित्र आत्मा, (7) सहस्राब्दी साम्राज्य।[12] बाइबल में ऐसा कुछ भी नहीं है जो बाइबल को सात विधानों में विभाजित करने का सुझाव देता है जिसमें एक दूसरे के साथ विरोधाभासी सिद्धांत शामिल हैं (उदाहरण के लिए, इस्राएल के विभाजन और कलीसिया के विभाजन के अंत में दूसरे आगमन पर व्यवस्था को न्यायोचित बनाये रखना)! यीशु स्वयं दृष्टांत बताते हैं कि "जो पिछले हैं, वे पहले होंगे, और जो पहले हैं, वे पिछले होंगे', का सिद्धांत को दर्शाते हुए। वह निश्चित रूप से कलीसिया के इतिहास के विभिन्न चरणों का वर्णन नहीं करता है!"

(2) सम्बंधित विवरणों की व्याख्या।

गृहस्वामी के पास यह अधिकार है कि वह जिसे चाहे उसे काम पर रख सकता है और अपने पैसे से वह जो चाहे कर सकता है। तथ्य यह है कि यीशु इस गृहस्वामी के साथ परमेश्वर के राज्य की तुलना करते हैं, यह दर्शाता है कि वह इस तथ्य पर तुरंत ध्यान दिलाता है कि परमेश्वर सब कुछ और सभी के स्वामी हैं, और यह कि परमेश्वर लोगों की नियति को पूर्ण संप्रभु तरीके से निर्धारित करता है। परमेश्वर को शासन करने का अधिकार है और हमें नहीं। उद्धार उसका मुफ्त उपहार है न कि मानव प्रयास का फल (इफिसियों 2: 8-9) यह विवरण प्रासंगिक है।

पहले मज़दूर के साथ समझौता उचित था। यीशु के समय में मज़दूर के रूप में सैनिकों के लिए मानक दैनिक वेतन एक दीनार था। तथ्य यह है कि जमींदार ने इन पहले घंटे के मज़दूरों के साथ एक समझौता किया, एक मजदूरी का करार, जो यह दर्शाता है कि ये श्रमिक निश्चित रूप से मजदूरी के लिए काम कर रहे थे। दोनों मालिक और साथ ही कर्मचारियों ने इसे उचित माना, क्योंकि वे इस पर सहमत थे। यह प्रासंगिक है।

तीसरा, छठा, नौवां और ग्यारहवां घंटा।

सामान्य श्रम परिस्थितियों में, मज़दूरों को दिन के अंत से ठीक एक घंटे पहले काम पर रखना बेहद अजीब होगा! यीशु निश्चित रूप से इन विवरणों को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं और इसलिए वे प्रासंगिक नहीं हैं। जो स्पष्ट हो जाता है वह यह है कि गृहस्वामी को केवल अपने दाख की बारी और उसमें किए गए कार्यों में ही दिलचस्पी नहीं है, बल्कि विशेष रूप से *बेरोज़गार मज़दूरों* में भी है! जो महत्वपूर्ण है वह यह नहीं की उसने कितनी देर तक काम किया, लेकिन यह कि उन्हें काम मिला है!

आखिरी मज़दूरों से किया वादा। उन मज़दूरों के साथ जिन्होंने दिन की शुरुआत के बाद अपना काम शुरू किया, गृहस्वामी ने कोई समझौता नहीं किया। उसने सिर्फ उनसे वादा किया कि जो सही होगा, वह उन्हें चुका देगा। यह विवरण इसलिए भी प्रासंगिक है, क्योंकि गृहस्वामी बाद में कहता है कि उसे अपने पैसे से वह करने का अधिकार है जो वह चाहता है। यह दृष्टांत के केंद्रीय बिंदु या मुख्य संदेश को भी बताता है, अर्थात् परमेश्वर के पास वह अधिकार है जिसके सम्बन्ध में वह जिसे वह नियुक्त करता है और वह उन्हें कैसे पुरस्कार देता है।

शब्द "जब शाम आई" (मत्ती 20: 8)। ये शब्द प्रासंगिक हैं। संदर्भ (मत्ती 19:28) दुनिया के इतिहास के अंत की ओर इशारा करता है, जब मसीह सभी लोगों का न्याय करेगा। इसमें केंद्रीय बिंदु या दृष्टान्त के मुख्य संदेश का संदर्भ दिया गया है, अर्थात्, उस दिन आने पर क्या होगा।

दाख की बारी का गृहस्वामी (मत्ती 20:8)। कुछ अनुवादक गृहस्वामी के सरदार को आदेश में, इस तथ्य का प्रतीकात्मक संकेत देखते है कि "पिता किसी का न्याय नहीं करता, लेकिन न्याय करने का सब काम बेटे को सौंप दिया जाता है।" (यूहन्ना

[12] www.deltacourse.org में जाकर परिशिष्ट 4 में " प्रकाशितवाक्य – अंतिम पुस्तक" को देखें।

5:22)। लेकिन क्योंकि गृहस्वामी का वचन 11-15 से कोई कार्य नहीं होता है, इसलिए यह व्याख्या कि "गृहस्वामी" पिता का प्रतिनिधित्व करता है और "सरदार" पुत्र संदिग्ध है। सरदार को कहानी से समबन्धित एक आकृति के रूप में मानना बेहतर है और इससे सीखे जाने वाले सबक के लिए नहीं। वह केवल कहानी को अधिक रोचक और जीवित बनाता है।

मज़दूरी का भुगतान अंतिम मज़दूरों से शुरू होता है। यह विवरण प्रासंगिक है, क्योंकि मसीह ने कहा, "जो पिछले हैं, वे पहले होंगे।" यह आदेश पहले मज़दूरों को यह देखने का मौका देता है कि गृहस्वामी दिन के अंत में आखिरी मज़दूरों का क्या करेगा।

हर एक को एक ही पुरुस्कार मिलता है। जब अंतिम मज़दूरों को एक दीनार दिया गया था, तो पहले मज़दूरों को अपने और गृहस्वामी के बीच सहमति से अधिक प्राप्त होने की उम्मीद थी। हालांकि, पहले मज़दूरों को अंतिम मज़दूरों के समान राशि मिलती थी। वे गृहस्वामी के खिलाफ बड़बड़ाने लगे। वे न केवल जो उनको प्राप्त हुआ उस से असंतुष्ट थे, बल्कि इस बात से भी सहमत थे कि दूसरों को क्या दिया गया था। उनके असंतोष का मुख्य कारण यह था कि अन्य, हालांकि, आखिरी थे, पहले बने थे, और वे, हालांकि, पहले, अंतिम बना दिया गया था! हालांकि, उनके बुरे रवैये के लिए केवल उन्हें ही दोषी ठहराया गया था, क्योंकि उन्हें वह मिला था जिसके लिए वह शुरू होने से पहले गृहस्वामी के साथ सहमत हुए थे। इससे पता चला कि उन्होंने मजदूरी के लिए काम करने की भावना का आश्रय लिया था, कि वे मालिक के अधिकारों को पहचानने में विफल रहे, और यह कि वे ईर्ष्यालु थे।

सभी सच्चे मसीहियों को अनुग्रह के रूप में दिया गया केवल एक पुरुस्कार है, अर्थात्, वे सभी अपने अंतिम चरण में परमेश्वर के राज्य की विरासत में हिस्सा लेंगे!

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहचानें।

परिचय। दृष्टांत का मुख्य संदेश (केंद्रीय विषय) या तो स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग में या कहानी से ही मिला है। जिस तरह से यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टांतों को समझाया या लागू किया है, हम जानते हैं कि हमें दृष्टान्तों की व्याख्या कैसे करनी चाहिए। एक दृष्टांत में सामान्य रूप से केवल एक मुख्य पाठ होता है, एक केंद्रीय बिंदु बनाने के लिए। इसलिए, हमें कहानी के प्रत्येक विवरण में एक आत्मिक सच्चाई खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, बल्कि एक मुख्य पाठ की तलाश करनी चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 20: 1-16 में दाख की बारी में श्रमिकों के दृष्टांत "परमेश्वर के राज्य में पुरुस्कार" के बारे में सिखाता है।

दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "परमेश्वर के पास वह अधिकार है की वह अपने राज्य में किसे काम पर रखे और अंतिम न्याय के दिन वह उन्हें क्या पुरुस्कार दे। इसलिए लोगों को सबसे पहले अंतिम होने वाले लोगों में होने से बचना चाहिए। उन्हें आत्मिक मामलों के संबंध में मजदूरी-के-लिए-काम की भावना में गिरने से बचना चाहिए।" वे अपने उद्धार को परमेश्वर से एक अनुग्रहपूर्ण उपहार के रूप में प्राप्त करते हैं, न कि किसी वस्तु के रूप में जो उन्होंने कमाई की है!

निःस्वार्थ सेवा, परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग अपेक्षा किए बिना

या पुरुस्कार की मांग के बिना सेवा करते हैं। वे आत्मिक मामलों के संबंध में मजदूरी-के-लिए-काम की भावना के शिकार होने से बचते हैं (मत्ती 19:16,22,27; 20:2,13)। वे परमेश्वर की संप्रभुता को पहचानने में असफल नहीं होते हैं, अर्थात, जब वह प्रसन्न होता है वह अपनी कृपा को वितरित करने का अधिकार रखता है (मत्ती 20:14-15, 23)। वे स्वीकार करते हैं कि परमेश्वर लोगों को एक संप्रभु तरीके से बुलाता है, और वह जिनको वह बुलाता है देता है, जो भी पुरस्कार वह उपयुक्त समझता है, वह भी संप्रभु तरीके से! और अंत में, परमेश्वर के राज्य के लोग किसी से भी ईर्ष्या करने से बचते हैं जो परमेश्वर से अधिक प्राप्त करता है, जितना वे अपेक्षा करते हैं या सोचते हैं (मत्ती 20:15, 20-28)। वे महसूस करते हैं कि मसीह के प्रेम को जानना और परमेश्वर की बेल या राज्य में काम करना बहुत ही सौभाग्य की बात है!

---

5. बाइबल में समानांतर और विपरीत पद्यांशों के साथ दृष्टांत की तुलना करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टांतों में सच्चाई के समानांतर या विपरीत सत्य है जो बाइबल के अन्य अंशों में पढ़ाया गया है। सबसे महत्वपूर्ण प्रति-संदर्भ खोजने की कोशिश करें जो हमें दृष्टांत की व्याख्या करने में मदद करते हैं। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टान्त की व्याख्या की जाँच करें।

खोजें और चर्चा करें। इनमें से हरेक बाइबल पद्यांश कैसे सिखाती है, जिसकी तुलना दाख की बारी में काम करनेवालों के दृष्टांत से कैसे होती है?

(1) परमेश्वर के पास एक संप्रभु अधिकार है की वह उसे रखता है जिसे वह अपनी सेवा में रखना चाहता है (मरकुस 13:34)।

प्रभु यीशु मसीह ने अपने दासो को अपने घर या दाख की बारी (दुनिया भर में मसीही कलीसिया या राज्य को अपने वर्तमान चरण में) में रखा है और प्रत्येक दास को इसमें अपना काम सौंपा है। इस प्रकार, प्रत्येक मसीही को यह पता लगाना चाहिए कि प्रभु उसके द्वारा कलीसिया और इस वर्तमान दुनिया में क्या करवाना चाहता है। उनका जीवन प्रभु के लिए सार्थक है और कोई भी उनके योगदान की अवहेलना नहीं कर सकता है।

(2) केवल परमेश्वर ही वास्तविक विकास देते हैं और दासों को स्वयं को परमेश्वर के सहकर्मी (1 कुरिन्थियों 3:5-11) के रूप में मानना चाहिए।

उनके दास पौलुस को कुरिन्थ में सुसमाचार के बीज बोने का काम सौंपा गया था और उसके दास अपुल्लोस को कुरिन्थ में बढ़ते पौधों को पानी देने का काम सौंपा गया था।

(3) परमेश्वर के पास अपनी इच्छा के अनुसार अपने दासों को पुरस्कृत करने का अधिकार है (1 कुरिन्थियों 3:10-15)।

उनके कुछ दास या साथी कर्मी बहुत सावधान रहते थे कि वे अपने निर्धारित काम को कैसे पूरा करते हैं। उन्होंने ऐसी सामग्रियों के साथ निर्माण किया, जिन्हें नष्ट नहीं किया जा सकता था। अंतिम न्याय के दिन उनके काम का अग्नि परीक्षण किया जाएगा और इससे उनके काम की गुणवत्ता का पता चलेगा। जब उनका काम अग्नि की परीक्षा से बचेगा, परमेश्वर उन्हें पुरस्कृत करेंगे। वह उन्हें कैसे पुरस्कृत करेगा, इस सन्देश में नहीं बताया गया है।

(4) विश्वास के माध्यम से धर्म के लिए विजय प्राप्त होती है

(1कुरिन्थियों 9:24-27; 2तीमुथियुस 4:6-8)।

किसी प्रतियोगिता में विजेता को इस तरह की माला मिलती है। लेकिन यहां सभी धावकों को एक जीत माल्यार्पण मिलता है जो हमेशा के लिए चलेगा, विश्वास के माध्यम से धर्म के लिए ताज (ग्रीक: हो तेस डिकाइओसुनेस स्टेफानोस)। परमेश्वर सार्वजनिक रूप से घोषणा करेंगे कि यीशु मसीह के उद्धार के सिद्ध कार्य के माध्यम से उनके दास को विश्वास से पूरी तरह से न्यायोचित ठहराया गया है। यह परमेश्वर की निपुण धार्मिकता का प्रतीक है जिसे मसीह ने अर्जित किया और परमेश्वर ने आस्तिक (प्रतिरूप) को विश्वास दिलाया!

(5) दस मुहरों (लूका 19:11-27) के दृष्टांत (देखें परिशिष्ट 15)।

धार्मिकता के मुकुट से परे परमेश्वर के विशिष्ट पुरस्कार विश्वास और परिश्रम के विभिन्न अंशों पर आधारित होते हैं। विश्वास और परिश्रम के विभिन्न स्तरों के लिए पुरस्कार के विभिन्न स्तर हैं! जिस सेवक में अधिक विश्वास और परिश्रम होता है, उसे नई पृथ्वी पर अपने अंतिम चरण में परमेश्वर के राज्य में एक बड़ी जिम्मेदारी दी जाएगी (तुलना करें। 1कुरिन्थियों 3:10-15)।

(6) अयोग्य सेवक का दृष्टान्त (लूका 17:7-10) (परिशिष्ट 39 को देखें)।

मसीहियों को मजदूरी के बदले काम की भावना के शिकार होने से बचना चाहिए। दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित हो सकता है। "मसीहियों को योग्य सेवक बनने का प्रयास करना चाहिए, जो केवल अपने कर्तव्य से अधिक करते हैं।" मसीहियों को जो कुछ भी करने के लिए कहा जाता है, केवल उसे करते हुए दास की भावना के साथ सेवा नहीं करनी चाहिए। उन्हें स्वतंत्र भावना के साथ सेवा करनी चाहिए, स्वेच्छा से, तहे दिल से और ख़ुशी से जितना वे करने के लिए कहा जाता है उससे अधिक करना चाहिए। वे प्रेम और कृतज्ञता की भावना से सेवा करते हैं। परमेश्वर के राज्य में एक सुस्त आत्मा को कोई प्राथमिकता नहीं मिलती है!

या दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित हो सकता है। *"मसीहियों को अपने आप को अयोग्य सेवकों के रूप में मानना चाहिए, जो अपना कर्तव्य करते हैं।"* मसीहियों को गर्व की भावना के साथ सेवा नहीं करनी चाहिए, यह सोचकर कि वे जो करने के लिए कहा जाता है, करने के लिए प्रशंसा, श्रेय या पुरस्कार के योग्य हैं। उन्हें सेवा का एक विशेषाधिकार के रूप में सम्मान करना चाहिए, उनकी आज्ञाकारिता के लिए श्रेय की उम्मीद किए बिना। वे नम्रता की भावना से सेवा करते हैं। परमेश्वर के राज्य में एक *गर्व की भावना* से प्राथमिकता प्राप्त नहीं होती है (तुलना करें 1पतरस 5:5-6)।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य उपदेशों को संक्षेप में वर्णन करें।

चर्चा करें। दाख की बारी में दासो के दृष्टांत की मुख्य शिक्षा क्या है ? यीशु मसीह ने हमें क्या जानना या मानना सिखाया और उसने हमें क्या करना या बनना सिखाया?

ध्यान दें।

(1) सभी लोगों को पता होना चाहिए कि परमेश्वर कैसे हैं ।

परमेश्वर अंतिम न्याय पर प्रत्येक मसीही को कृपा के साथ पुरस्कृत करेंगे। हालाँकि, ये सभी पुरस्कार मसीहियों को इसलिए नहीं दिए गए हैं की वे उनके लायक हैं या उन्होंने उन्हें अर्जित किया है, बल्कि इसलिए कि सब कुछ परमेश्वर के प्रेम और

अनुग्रह पर आधारित है। इफिसियों 2:10 के अनुसार भी जो कार्य मसीही करते हैं वह परमेश्वर की कृपा पर आधारित होता है!

(2) मसीहियों को पता होना चाहिए कि उन्हें क्या होना चाहिए।

महत्वपूर्ण यह है कि परमेश्वर की सेवा सही स्वभाव या आत्मा के साथ करना और ईमानदारी और लगन से करनी चाहिए: परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग आत्मिक मामलों के लिए मज़दूरी के लिए काम की भावना के शिकार होने से बचते हैं, और इसके बजाय परमेश्वर के संप्रभु अधिकार को पहचानते हैं की वह जिसको चाहते हैं बुलाते हैं और अपनी इच्छा के अनुसार लोगों को पुरस्कृत करते हैं।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएँ]*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना*** करने के लिए समूह में ***बारियाँ लें।*** या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी करें** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह अगुवा। समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी नकल करने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "दाख की बारी में मज़दूरों " का प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **यिर्मयाह 32, 33, 36 और 37** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **श्रृंखला ठ का पुनरवलोकन करें: "परमेश्वर के संसाधन** (1) परमेश्वर की उपस्थिति। इब्रानियों 13:5-6, (2) परमेश्वर का वचन। भजन सहिंता 119:105, (3) परमेश्वर की सामर्थ्य। यशायाह 41:10, (4) परमेश्वर की बुद्धि। याकूब 1:5; (5) परमेश्वर की चंगाई। 2इतिहास 7:14.5।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 13:1-14**।
   बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन सहिंता 5:3)।
7. परमेश्वर के राज्य पर प्रचार करने के लिए अपनी नोटबुक का अद्यतन करें। शांत समय में अपने नोट्स, अपने स्मरण किए हुए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।